ब्रिटेन-भारत निवेश शिखर सम्मेलन में
प्रधानमंत्री का भाषण

लंदन
10 - अक्तूबर - 2006

प्रधानमंत्री श्री टोनी ब्लेयर, श्री अलिस्टियर, श्री कमलनाथ, सज्जनो, बहनो और भाइयो,

मैं प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर, उनके सहयोगियों और आप सब का बहुत आभारी हूं जिन्होंने इस सम्मेलन के लिए समय निकाला। मैं जानता हूं कि भारत और ब्रिटेन के व्यापार और उद्योग के प्रतिनिधि यहां लंदन और नई दिल्ली में अक्सर ही आपस में मिलते रहते हैं। लेकिन मुझे खुशी है कि आज हमें आपसे बात करने का मौका मिला है। जैसा मैंने अक्सर कहा है कि दो देशों के बीच संबंध वास्तव में लोगों और व्यापारियों के बीच संबंधों की परिणति होते हैं। हमारे संबंधों के विकास की सबसे अच्छी बात यह है कि दोनों देशों के राजनीतिक नेता इस बारे में निश्चित मत हैं कि हमें आगे बढऩा चाहिए और पूरी निष्ठा और गतिशीलता के साथ आगे बढऩा चाहिए।

मुझे याद है, जब हमारी दोनों सरकारों ने बहुत पहले 1992 में भारत-ब्रिटेन भागीदारी पहल की शुरूआत की थी ताकि दोनों देशों के बीच व्यापार और निवेश संबंधों को फिर से आगे बढ़ाया जा सके। मैं समझता हूं कि यह पहल वास्तव में बहुत उपयोगी रही और पिछले एक दशक में ब्रिटेन और भारत के बीच व्यापार और पूंजी निवेश में बढ़ोतरी हुई है।

लेकिन अब और बड़ा कदम उठाने का वक्त आ गया है। मैं जानता हूं कि प्रधानमंत्री ब्लेयर और मैं दोनों चाहेंगे कि ऐसा हो। और मुझे खुशी है कि इसके शुरूआती संकेत बहुत ही उत्साहजनक हैं। अभी कुछ देर पहले दोनों देशों के व्यापार और उद्योग जगत के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री ब्लेयर से और मुझसे मिले थे और उन्होंने व्यापार, निवेश और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाने के लिए कई सुझाव दिए थे। हमने उन्हें आश्वासन दिया है कि नीतिगत व्यवस्था बनाते समय उनके सुझावों पर पूरा ध्यान दिया जाएगा। पर जैसा कि प्रधानमंत्री ब्लेयर ने कहा राजनीति संभावनाओं के साथ चलती है। इसलिए यह अड़चन ऐसी है, जिसे चाहकर भी हटाया नहीं जा सकता।

लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हमने भारत में विनिर्माण क्षेत्र में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के रास्ते की बहुत सारी रूकावटों को दूर कर दिया है। मैं ब्रिटेन से और ज्यादा विदेशी प्रत्यक्ष निवेश चाहूंगा, विशेष रूप से बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में ।

हमारी सरकार वित्तीय और कानूनी सेवाओं सहित सेवाओं के व्यापार में और ज्यादा उदारीकरण चाहेगी। मैं जानता हूं कि हमारे वित्तीय क्षेत्र में ब्रिटेन को बहुत दिलचस्पी है।

मैं यह मानता हूं कि हमें पेंशन कोष प्रणाली को और व्यापक बनाने की जरूरत है। हमें बहुत बड़े बीमा क्षेत्र की आवश्यकता है, जिसका पूंजी आधार बहुत बड़ा हो और जिसके दायरे में कई तरह के उत्पादन आते हों। यही चीजें है जिनसे आवश्यक दीर्घावधि धनराशि प्राप्त होगी जिसे ऋण बाजार में निवेश किया जाएगा। इससे हमारे देश में निवेश आवश्यकताओं के लिए, विशेष रूप से महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा क्षेत्र में निवेश के लिए संसाधन उपलब्ध होंगे ।

मुझे विश्वास है कि हम निकट भविष्य में सार्थक राजनीतिक आम सहमति बनाने और वित्तीय क्षेत्र में सुधारों को आगे बढ़ाने में कामयाब होंगे।

मैं यहां ब्रिटेन में निवेशकों को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि भारत सुरक्षा से तथा निवेश और बौद्धिक सम्पदा के संरक्षण से संबंधित सभी अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों का पालन करता है। डाटा सुरक्षा के लिए हमारे पास मानकों की बहुत अच्छे डिजाइन वाली प्रणाली है। भारत में निवेश करना सुरक्षित भी है और लाभदायक भी। और इस संबंध में क्या किया जा सकता है, यह हम हमेशा अपने मित्रों से सीखते

रहेंगे। बौद्धिक सम्पदा अधिकारों के सिलसिले में सहयोग को मजबूत करने के लिए हमने ब्रिटेन के साथ एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं। भारत में विनिर्माण के क्षेत्र में, विशेष रूप से आटोमोबाइल और आटो-पुर्जो , औषधि निर्माण और जैव-प्रौद्योगिकी तथा खाद्य प्रसंस्कण के क्षेत्र में नये विशाल अवसर हैं। हम ब्रिटेन के लघु और मझौले उद्यमों का स्वागत करेंगे और चाहेंगे कि वे भारत में लाभदायक निवेश की संभावनाओं के बारे में अनुकूल तरीके से विचार करें ।

मैं जानता हूं कि ब्रिटेन में लघु और मझौले उद्यमों में काफी गतिशीलता है। वे भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप नई तकनीकों के इस्तेमाल से भारत में विकास की गति को बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं ।

विश्व की कई कंपनियों ने भारत को अपने अनुसंधान का केन्द्र बना लिया है और भारत में अनुसंधान तथा विकास के क्षेत्र में कंपनियां अपने निवेश को बढ़ा रही हैं। ब्रिटेन की शैक्षिक और अनुसंधान संस्थाएं भारतीय कंपनियों और संस्थाओं को प्रौद्योगिकी उपलब्ध करा रही हैं। हाल ही में शुरू की गई ब्रिटेन-भारत शिक्षा और अनुसंधान पहल दोनों देशों की शिक्षा संस्थाओं के बीच सहयोग बढ़ाने और छात्रों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के मामले में बहुत कुछ कर सकती है। प्रधानमंत्री ब्लेयर के प्रयासों से ही यह पहल संभव हुई है। छात्रों के लिए वीसा और कार्य परमिट से संबंधित मुद्दे व्यवस्थित हो जाने के बाद इस काम में और तेजी आएगी।

मेरे लिए ब्रिटेन की यात्रा हमेशा एक भावनात्मक यात्रा होती है और मुझे अपने युवावस्था की याद दिलाती है। प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर के आतिथ्य के लिए मैं उनका बहुत आभारी हूं। दोनों देशों के बहुआयामी संबंधों और ज्यादा बढ़ाने के लिए मिले उनके जोरदार समर्थन के लिए मैं उनका शुक्रगुजार हूं। मुझे पूरी उम्मीद है कि हम भारत-ब्रिटेन संबंधों का नया अध्याय लिख सकते हैं। बहुत-बहुत

धन्यवाद।

******